International Journal of Applied Research 2023; 9(10): 240-242

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2023; 9(10): 240-242
www.allresearchjournal.com
Received: 09-07-2023
Accepted: 16-08-2023

किस्मतुन बेगम
शोधार्थिनी, हिन्दी विभाग, अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज, नामसाइ, अरुणाचल प्रदेश, भारत

डॉ. शिवम चतुर्वेदी
शोध निर्देशक, प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज, नामसाइ, अरुणाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
किस्मतुन बेगम
शोधार्थिनी, हिन्दी विभाग, अरुणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज, नामसाइ, अरुणाचल प्रदेश, भारत

मणिपुर की सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत का विश्लेषण

किस्मतुन बेगम, डॉ. शिवम चतुर्वेदी

सारांश
मणिपुर प्रदेश पूर्वोत्तर भारत का सीमांत राज्य है जो अपने नैसर्गिक प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। इसके मनोरम दृश्य के कारण इसे भारत की 'मणि' कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। प्राचीन मणिपुरी पुराण गंथों में मणिपुर को पृथ्वी का कमल भी कहा गया है। मणिपुर प्रदेश की महान भूमि ने स्वतंत्रता संग्राम की पूर्वोत्तर भारत की महान नायिका रानी गाइदिन्ल्यू और उनके गुरु जादोनांड् को जन्म दिया है। इन पूर्वोत्तर भारत के गौरवशाली लोगों में मणिपुर की पवित्र वीर भूमि के युवराज वीर टीकेंद्रजीत सिंह, पाओना ब्रजवासी, थांगाल जनरल तथा जननेता हिजम इराबोत का नाम हमारे मन में राष्ट्रप्रेम के भाव को नई स्फूर्ति से भर देता है। मणिपुर वह स्थान है जहां समय के साथ कई प्रकार की सभ्यताएं व संस्कृतियाँ मिलीं जो अंत में एक दूसरे में घुल–मिल गई।

कूटशब्द : सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता संग्राम, वीर टीकेंद्रजीत सिंह, पाओना ब्रजवासी, मणिपुर

प्रस्तावना
स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रयासों में मणिपुर का अप्रतिम योगदान रहा है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भी आजाद हिंद फौज का मुख्यालय मणिपुर के 'मोइराङ' में स्थापित किया था। मोइराङ् निवासी हेमाम नीलमणि सिंह नेताजी के एक प्रमुख सहयोगी थे, जिन्हें स्वयं नेताजी ने हिंदी सिखाई थी। मणिपुर की साहित्यिक चेतना पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस और राष्ट्रभक्तों की राष्ट्रप्रेम की भावना की झलक भी तत्कालीन लोककाव्य और सृजनात्मक रचनाओं में मिलती है। यही मातृभूमि और देशप्रेम की भावधारा मणिपुर के हिंदी साहित्य में अंतर्निहित है। मणिपुर की राजधानी इंफाल और इसके चारों ओर निवास करने वाला मणिपुरी समाज तथा जनजातीय समुदायों के हिंदी अनुरागी लोग हिंदी भाषा और साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावधारा से जुडने के लिए प्रयत्नयशील रहे हैं। वीर भूमि मणिपुर की लोककाव्य शैली में वर्णित मातृभूमि वंदना, देशपेम की भावना का चित्रण रोमांचित करने वाले हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद रचित मणिपुर की हिंदी कविता और हिंदी रचनाओं में राष्ट्रीय तत्त्व भारतीयता की आभा से प्रभावित होकर व्यापक फलक पर दिखलाई पडता है। समकालीन मणिपुर के हिंदी के सृजनात्मक साहित्य में राष्ट्रीयता और भारतीयता की अवधारणा का स्वरूप व्यापक रूप में व्यक्त हो रहा है।
मणिपुर के हिंदी साहित्य की संवेदना और मणिपुर प्रदेश की भाषाओं के साहित्य की संवेदना एक सांस्कृतिक सेतु निर्मित करने में सक्षम है। राष्ट्रीयता की भावना सुदृढ और व्यापक बने, इसके लिए भाषा साहित्य और संस्कृति संगम का मार्ग ही एक मात्र निदान है। साहित्य नष्ट होती मानवता को बचाने में सक्षम है। संकुचित वैचारिक सोच को भाषा और साहित्य ही रोक पाने में सक्षम है। पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में मणिपुर ऐसा राज्य है, जिसने हिंदी भाषा और उसके साहित्य का स्वागत राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय आवश्यकता के संदर्भ में किया है। हिंदी एक भाषा ही नहीं है बल्कि वह भावात्मक एकता को प्रवाहित करने वाली धारा है। इसी भावना के फलस्वरूप मणिपुर में आज ऐसे सैंकडों छोटे–बडे हिंदी लेखक–लेखिकाएँ हैं जो पूरे अधिकार के साथ हिंदी भाषा में मातृभाषा की तरह साहित्य रचना करते हैं। मणिपुरी भाषी हिंदी लेखक अपने सृजनात्मक साहित्य द्वारा हिंदी साहित्य की परंपरा के अंतर्गत एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाते जा रहे हैं। वहाँ पर हिंदी में मौलिक सृजन भी हो रहा है तथा अनुवाद कार्य भी चल रहा है। साथ ही हिंदी की कई पत्रिकाएँ जैसे महीप, कुंदोपरेड्, युमशकैश, लटचम आदि प्रकाशित हो रही हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत
इनका समाज पितृवंशीय है परंतु महिलाएं अधिकतर श्रम का भार उठाती हैं। महिलाएं आय अर्जन की जिम्मेदारी बांटती हैं और इन्हें केवल घर के कामों तक सीमित नहीं रखा जाता।

इनका घर सही मायने में एक सामाजिक इकाई होता है और परिवार के मुखिया को कुछ धार्मिक कर्तव्य पूरे करने होते हैं। इनके परिवारों में पुरुष, उसकी पत्नी और अविवाहित बच्चे होते हैं। ये दोनों प्रकार के विवाह करते हैं अर्थात पारंपरिक एवं घर से भागकर दोनों। वचनबद्धता–पारम्परिक विवाह में लड़के का पिता व्यय का भुगतान करता है। विवाह के बाद लड़का अपनी पत्नी के साथ गाँव में एक अलग घर में बस जाता है। तथापि सबसे छोटा बेटा अपने पिता के घर रुकता है और इस घर का वारिस होता है। बाकी सभी बच्चे शेष संपत्ति में बंटवारा करते हैं। वे किसी भी स्थान से विवाह कर सकते हैं चाहे वह गाँव से बाहर हो परंतु उन्हें गोत्रांतर विवाह का पालन करना होता है।

गोत्रांतर विवाह के उल्लंघन को अच्छा नहीं माना जाता है और यह लगभग वर्जित है। यद्यपि एकल विवाह सामान्य नियम है, चूंकि इनमें महिलाएं पुरुषों से अधिक हैं, परंतु इनमें बहुविवाह भी असामान्य नहीं है। ये लोग प्रकृति से फूलों को पसंद करने वाले होते हैं जिनसे वे स्वयं को खूबसूरती से सजाते हैं। इनके परिधान सरल परंतु रुचिकर होते हैं। महिलाएं सुंदरता से रंगीन लंबी पट्टीदार स्कर्ट, ब्लाउज और सफेद चद्दर पहनती हैं और पुरुष सफेद धोती और चद्दर और समारोहों में एक पगड़ी पहनते हैं।

मणिपुर के लोगों में गीतों के सौंदर्य तथा लय–ताल के साथ प्रदर्शन कला के लिए एक अंतर्निहित प्रेम होता है। इनकी समृद्ध संस्कृति तथा परंपरा इनके हथकरघा, रुचिकर कपड़ों और हस्तशिल्प की बारीक कारीगरी में भी दिखाई देती है। इन लोगों में बुनाई महिलाओं की एक पारंपरिक कला है और इसके लिए इन्हें आसानी से बाजार उपलब्ध हो जाता है। ये लोग अत्यधिक संवेदनशील होते हैं और कलाओं के प्रति अंतर्निहित प्रेम के साथ उनके जीवन का अद्वितीय पैटर्न उनके नृत्य तथा संगीत में दिखाई देता है। इनके नृत्य, चाहे वे लोकनृत्य हों अथवा शास्त्रीय नृत्य हो अथवा आधुनिक नृत्य हो, धार्मिक प्रकृति के होते हैं।

अर्थव्यवस्था

कृषि यहाँ के लोगों का प्रमुख रोजगार है। पहाड़ियों की कुल काम करने वाली जनसंख्या के लगभग 88 प्रतिशत लोग और घाटी में काम करने वाली जनसंख्या के लगभग 60 प्रतिशत लोग पूरी तरह से कृषि और इससे संबंधित कार्यों जैसे पशुपालन, मछलीपालन और वानिकी पर निर्भर हैं।

ऐसा इसलिए संभव होता है क्योंकि नदियों से जलोढ़ मिट्टी का निक्षेप घाटी की मृदा को उपजाऊ बनाता है, और पहाड़ियों में बड़ी संख्या में बहने वाली धाराएँ सिंचाई सुनिश्चित करती हैं। प्रमुख खाद्य चावल है और कम मात्रा में उगाए जाने वाली वस्तुएँ हैं तंबाकू, गन्ना, सरसों आदि।

बुनाई उद्योग अच्छी तरह से विकसित है और प्रत्येक घर में एक करघा है और यहाँ की महिलाएं विशिष्ट रूप से अद्वितीय स्थानीय डिजाइन तैयार करने में व्यस्त रहती हैं। हथकरघा उद्योग मणिपुर में सबसे बड़ा कुटीर उद्योग है और यहाँ से अंतिम रूप से तैयार की गई वस्तुएँ प्रायः निर्यात की जाती हैं।

त्योहार

मणिपुरी शायद ही कोई ऐसा त्योहार मनाते हैं जिसके साथ नृत्य, संगीत और गाना न हो। उनका लाई हराओबा त्योहार बहुत ही रुचिकर नृत्य नाटक है जिसमें पुजारी (माइबा) और पुजारिनें (माइबी) जीवन के सृजन को दर्शाते हैं। यह मार्च–अप्रैल के दौरान लगभग 10–15 दिनों के लिए देवताओं और देवियों के गाँव के मंदिरों के सामने मनाया जाता है और पूरा गाँव इसमें भाग लेता है। देवताओं और देवियों के सामने आनंद मनाने का यह त्योहार उनके बीच पूर्व–वैष्णव संस्कृति का एक उदाहरण है। लाई हराओबा त्योहार में नृत्य का तांडव तथा लास्य पहलू खंबा (भगवान शिव के अवतार), थोईबी (पार्वती का अवतार) नृत्य में संयमित तथा नाजुक भाव–भंगिमाओं के साथ मनोरम पोशाकों में प्रस्तुत किया जाता है।

होली मणिपुरी लोगों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है और इसे बंगाल में स्वामी चौतन्य के जन्म से संबंधित बसंत पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। होली के त्योहार के दौरान युवा लोग और अन्य सभी संगीतकारों के समूहों के साथ बाहर आते हैं और एक जुलूस के रूप में मंदिरों में जाते हैं और एक–दूसरे पर रंगीन पानी छिड़कते हैं। इस त्योहार के दौरान लड़के और लड़कियां थाबल चौबा नृत्य में भाग लेते हैं।

हाथ में करताल ले कर संयुक्त भक्ति गान (संकीर्तन चोलम) और इसके साथ मृदंग के साथ शरीर को संचालित करना भी मणिपुर में प्रसिद्ध एक और अत्यंत लोकप्रिय त्योहार है।

पुंग चोलम अथवा करताल चोलम संकीर्तन चोलम का एक भाग है और पुरुषों का एक समूह प्रदर्शन होता है। धोती, पगड़ी पहने ड्रमवादक शरीर के कोमल तथा सुंदर संचालन के साथ ड्रम तथा करताल की लय पर यह नृत्य शुरू करते हैं और जैसे वे धीरे–धीरे गति पकड़ते हैं वे अपने ड्रम के साथ उत्तेजक करतब करते हैं।

"रास लीला, जो मणिपुरी शास्त्रीय नृत्य का प्रतीक है, को राधा और कृष्ण के अलौकिक तथा अनंत प्रेम पर रचा गया है जैसा कि हिन्दू ग्रन्थों में दर्शाया गया है और यह कृष्ण और राधा के भव्य और पारलौकिक प्रेम तथा गोपियों के भगवान के प्रति समर्पण को दर्शाता है"। यह सामयिक नृत्य–नाटक पूरी तरह से शास्त्रीय नृत्य शैली में बसंत पूर्णिमा, शरत पूर्णिमा और कार्तिक पूर्णिमा के दौरान मंदिर के प्रांगण में किया जाता है। इसमें नृतकों की नृत्य मुद्राएँ सुंदर तथा अत्यधिक शैलीगत होती हैं। नृतकों की पोशाकों की सुंदरता नृत्य की शोभा को और बढ़ाती हैं।

रुचि के स्थान

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान जो दर्शनीय हैं वे हैं मणिपुर के पूर्व शासक के शाही महल के साथ स्थित एक वैष्णव मंदिर गोविंदजी मंदिर। अन्य दर्शनीय स्थान हैं युद्ध समाधि स्थल, ख्वाइरामबंद बाजार, शहीद मीनार, मणिपुर राज्य संग्रहालय, मणिपुर जन्तु उद्यान, लंगथाबल, खोंघमपट ऑर्किडेरियम। पूर्वोत्तर भारत की ताजे पानी की सबसे बड़ी झील मणिपुर में स्थित है। इसे लोकतक झील और सेन्द्रा द्वीप कहा जाता है। लोकतक की पश्चिमी सीमा पर यह झील फुबाला है। विश्व का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान है केईबुल लमजाओ राष्ट्रीय उद्यान जो लोकतक झील पर स्थित है। यह मणिपुर के नाचने वाले हिरण संगई का अंतिम प्राकृतिक वास है।

शिक्षा

आज के दौर में मणिपुर में काफी सुधार देखा गया है। पिछले कुछ सालों तक शिक्षा सिर्फ मणिपुर के उंचे तबके तक ही सीमित थी। पिछले कुछ दशकों में मणिपुर की शिक्षा प्रणाली के पिछड़ने के कुछ कारणों में सांप्रदायिक संघर्ष, आर्थिक ब्लॉकेड और लगातार जारी हिंसा रहे। मणिपुर में शिक्षा के परिदृश्य में एक बड़ा बदलाव तब आया जब नई शिक्षा प्रणाली को अपनाया गया। पहले डिवीजन से पास होने वालों की संख्या में जबरदस्त बढ़ोत्तरी देखी गई है। इस बढ़ोत्तरी और उंचे कट ऑफ के पीछे शिक्षण संस्थाओं की सकारात्मक भूमिका को नहीं नकारा जा सकता। मणिपुर की अर्थव्यवस्था में लगातार सुधार हो रहा है। सरकार के सकारात्मक रवैये के चलते ही इस प्रांत की अर्थव्यवस्था को फलने–फूलने में मदद मिली है। मणिपुर में लगभग 7,700 लघु उद्योग हैं। जिन लघु उद्योगों ने राज्य की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में मदद की है उनमें हथकरघा, ग्रामोद्योग, कुटीर उद्योग और हस्तशिल्प शामिल हैं।

निष्कर्ष

मणिपुर की सरकार राज्य की अर्थव्यवस्था के हर पहलू को मजबूत बनाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है और राज्य को एक मजबूत आधार दे रही है। यहां कई ऐसी छोटी कंपनियां हैं जो विभिन्न वस्तुओं का निर्माण कर रही हैं जैसे प्लास्टिक, इलेक्ट्रानिक गुड्स और स्टील। इससे राज्य की अर्थव्यवस्था पर समग्र रुप से अच्छा असर पड़ता है। मणिपुर में कुछ सीमेंट उद्योगों की स्थापना का भी राज्य की अर्थव्यवस्था में विशेष योगदान है। राज्य की अर्थव्यवस्था के स्तर को और बढ़ाने के लिए मणिपुर की सरकार ने कई प्रशिक्षण संस्थान खोलने का निर्णय लिया है, जिससे लोगों को नई से नई तकनीक सीखने का मौका मिले और सभी उद्योगों को फायदा हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. काङजम सिंह (2002) आधुनिक मणिपुरी कविताएँ विभिन्न कवि देवराज वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली।
2. चाओबा कवि (1997) जीवन और साहित्य देवराज साहित्य विभाग मणिपुर हिंदी परिषद इम्फाल विधानसभा मार्ग इम्फाल मणिपुर
3. नवजागरणकालीन मणिपुरी कविताएँ विभिन्न कवि अनु सिद्धनाथ प्रसाद संण् देवराज 1995 सुजाता प्रकाशन मेरठ।
4. पुष्पमाला. डॉ0 लमाबम कमल सिंह अनु. हजारीमयुम सुबदनी देवी (1993) हजारी युम विनोद कुमार शर्मा थाङपात इम्फाल।
5. भारतीय शिखर कथा कोश (1997) मणिपुरी कहानियाँ एकाधिक अनुवाद कमलेश्वर पुस्तकाय प्रकाशन नई दिल्ली।
6. सिंह लमाबम कमल (1962) कविश्रीमालाए अनु. अरिबम छत्रध्वज शर्मा 1962 राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा महाराष्ट्र।
7. लक्ष्मी विजय (2002) धरती यविभिन्न कहानीकारद्ध अनु. परिलेख प्रकाशन नजीबाबाद।